Vol III Issue IX March 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-9 | March-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

पंचायती राज की उपलब्धियां एवं समस्याऐं

ओमप्रकाश मेहरडा

शोधार्थी लोकप्रशासन विभाग श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडे.वाला विश्वविद्यालय,चुडे.ला,झुंझूनु राजस्थान.

सारांश :-हमारे देश में पंचायती राज की शुरूआत को एक ऐतिहासिक घटना कहा गया। पंचायती राज संस्थाओं से अधिक प्रशंसा बहुत ही कम संस्थाओं को प्राप्त हुई है। प0 नेहरू ने स्वंय कहा था कि '' मैं पंचायती राज के प्रति पूर्णतः अशान्वित हूं। मैं महसूस करता हूं कि भारत के सन्दर्भ में यह बहुत कुछ मौलिक एवं क्रान्तिकारी है।'' प्रो0 रजनी कोठारी के अनुसार ''इन संस्थाओं ने नए स्थानीय नेताओं को जन्म दिया है जो आगे चलकर राज्य और केन्द्रीय सभाओं के निर्वाचित प्रतिनिधियों से अधिक शक्तिशाली हो सकते है।''

प्रस्तावना :

कांग्रेस और अन्य दलों के राजनीतिज्ञ इस संस्थाओं को समझने लगे है। अब वे राज्य विधानमण्डल के बजाय पंचायत समिति और जिला परिषदों को तरजीह देने लगे है। वस्तुतः इन संस्थाओं ने देश के राजनीतिकरण, आधुनिकीकरण और समाजीकरण मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में जन सहभागिता में वृद्धि करके गांवों में जागरूकता उत्पन्न कर दी है। हाल ही में राजस्थान में पंचायती राज के 27 वर्षो की उपलब्धियों का एक सर्वेक्षण के माध्यम से अध्ययन प्रतिवेदन प्रकाशित हुआ है। जिसमें कहा गया है कि :–

1.पंचायती राज व्यवस्था से गांवों में राजनीतिक व प्रशासनिक संस्थाओं के बारे में समझ का विकास हुआ है।
2.लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की इस प्रक्रिया में समाजीकरण के दौर से गुजरते व्यक्तियों के बीच जन तांत्रिक मूल्यों के विकास से अधिकारो के प्रति चेतना बढ़ी है। मताधिकार चेतना इसी सामान्य चेतना स्तर का विशिष्ट स्वरूप है।
3.पंचायती राज व्यवस्था ने 30 वर्षो के कार्यकाल में केवल ग्रामवासियों के मानसिक विकास में योगदान दिया है। बल्कि गांवों के भौतिक विकास में भी कारगर भूमिका निभायी है। जिससे गांवों में यातायात सिंचाई, पेयजल सुविधाओं का विस्तार हुआ है और सामान्य ग्रामवासी के जीवन स्तर में आंशिक सुधार भी आया है।
4.शिक्षण संस्थाओं की शुरूआत ने साक्षरता का प्रतिशत ही नहीं बढाया है बल्कि गांव व्यक्तियों के विचारों व मूल्यों में परिवर्तन के लिए भी कार्य किया है।
5.पंचायती राज व्यवस्था के लागू होने के बाद गांव में सामाजिक बुराइयों के समापन के लिए भी एक वातावरण तैयार हुआ है। जिसके अन्तर्गत मृत्यु भोज, दहेज प्रथा, छुआछूत, बाल विवाह तथा महिला अत्याचार जैसी सामाजिक समस्याओं के समाधान की दिशा में कार्य किया है।

पंचायती राज की समस्याएं निम्न है :–

1.सता के विकेन्द्रीकरण की समस्या :– लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की सफलता की पहली 21 वीं सता का स्थानीय संस्थाओं को हस्तान्तरण है। पंचायती राज संस्थाओं को स्वायत शासन की शक्तिशाली इकाईयां बनानी था। यह तभी संभव है जब प्रेरणा नीचे के स्तरों से शुरू हो और उच्च स्तर केवल मार्ग निर्देशन करे। राज्य सरकारे इन संस्थाओं को अपने आदेशों का पालन करने वाला एजेण्ट मात्र न समझे इसके लिए नौकरशाही की मनोहरी में परिवर्तन की आवश्यकता है।

2.अशिक्षा एवं निर्धनता की समस्या :– अशिक्षा और निर्धनता ग्रामीणों की विकट समस्या है। इसके कारण ग्रामीण नेतृत्व का विकास नहीं हो पा रहा है। और वे अपने संकीर्ण दायरों से उपर नहीं उठ पाते है। किन्तु वर्तमान में शिक्षा की दिशा में शासन द्वारा किए गए कार्यो से हमारे उत्साह में वृद्धि हो रही है।

3.दलगत राजनीति :– पंचायती राज की सफलता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा दलगत राजनीति है। पंचायते राजनीति का अखाड़ा बनती जा रही है। पंचायतों में छोटी–छोटी बातो को लेकर झगड़े हुआ करते है। दलबन्धी होती है और बहुत सा समय लड़ने–झगड़ने में निकल जाता

है। यदि हमारे राजनीतिक दल पंचायतों के चुनावों में हस्तक्षेप करना बन्द कर दे तो पंचायतो की गन्दी राजनीति के दलदल से निकाला जा सकता है।

4.धन की समस्या :– धन की समस्या पंचायती राज संस्थाओं के सामने शुरू से ही रही है। इन संस्थाओं को स्वतंत्र आर्थिक स्त्रोत या तो दिए ही नहीं गए या फिर जो दिए गए व अर्थशून्य है। परिणामतः शासकीय अनुदानों पर ही जीवित रहना पड़ा है। अतः आप के पर्याप्त एवं स्वतंत्र स्त्रोत पंचायती संस्थाओं को दिए जाने चाहिए ताकि उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बन सके।

इनके अतिरिक्त ओर भी कई समस्याएं है। राजनीतिक जागरूकता की कमी, विकास कार्यो की उपेक्षा, शासकीय अधिकारियों एवं निर्वाचित प्रतिनिधियों में सहयोग का अभाव आदि।

इसके अतिरिक्त सभी राज्यो में राज्य के विधानमण्डल और संसद सदस्यो को पंचायती राज संस्थाओं से सम्बद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। विधानमण्डल तथा संसद के सदस्यों की स्थिति इतनी उच्च होती है। के वे पंचायती राज संस्थाओं पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते है। और इस प्रकार अन्य सदस्यों के अभिक्रम को कुचल देते है तथा पंचायती राज संस्थाओं के कल्याणकारी विकास में बाधा डालते है। विधानमण्डल तथा संसद के सदस्यों के पास विधायी तथा राजनीतिक काम बहुत अधिक रहता है। इसलिए उनके पास इतना समय नहीं होता है कि वें अपने विधायी कार्यो के अतिरिक्त पंचायती राज संस्थाओं की ओर पर्याप्त ध्यान दे सके। अतः उच्च स्तरीय राजनीतिज्ञों का ग्रामीण स्थानीय शासन से सक्रिय रूप में संबंध हो पंचायती राज संस्थाओं के हित में नहीं है। इन सभी समस्याओं का परिणाम यह हुआ है कि पंचायती राज अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका।

पंचायती राज की सफलता के सुझाव :–

भारत के लिए गांव कार्मिक समृद्धि का प्रतीक है देश तभी फलेगा–फूलेगा जब उसकी आत्मा के रूप में गांव की प्रगति हो। मौके का सर्वागींण विकास पंचायतों की सफलता के द्वारा ही सम्भव है। पंचायतो की सफलता के लिए निम्नांकित सुझाव दिए जा सकते है :–

प्रथमः– पंचायती राज संस्थाओं में व्याप्त को समाप्त करना होगा।
द्वितीय :– पंचायतो के चुनावों में मतदान को अनिवार्य करना होगा और मतदाता चुनाव में लाभ भले उस पर दण्ड लगाया जाए जो पच्चास हजार रूपये से अधिकतम हो।
तृतीय :– पंचायतों की वित्तीय हालत सुधारनी चाहिए।
चतुर्थ :– अधिकारियों को पंचायतो के लिए दार्शनिक और पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए।
पंचम :– पंचायतो के निर्वाचित प्रतिनिधिों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और अन्त में पंचायत पर विश्वास करना होगा, वे गलतियां करेगी और हमारा दृष्टिकोण उनके प्रति उदार ही अपेक्षित है।
षष्ट :– राजस्थान तथा आन्ध्रप्रदेश के पंचायती राज अधिनियमों में यह प्रावधान किया गया है कि दो से अधिक सन्तान पैदा करने वाले व्यक्ति को चुनाव के अयोग्य माना जावे। बढ़ती हुई जनसंख्या को नियन्त्रित करने की दिशा में उठाया गया यह एक प्रभावी कदम है जिसे अन्य राज्यों द्वारा भी अंगीकृत किया जाना चाहिए।

पंचायती राज संस्थाओं के प्रति राज्य सरकारो तथा जिला अधिकारियों का उदासीन होना इनके लिए घातक होगा। राज्य सरकारों, उनके तकनीकी अधिकरणों तथा जिला अधिकारियों को पंचायती राज संस्थाओं का मार्ग निर्देशन करना तथा उन्हें प्रोत्साहित करना है जिला अधिकारियों को इन विकेन्द्रीकृत लोकतांत्रिक संस्थाओं के मित्र, दार्शनिक तथा उन्हें प्रोत्सान करना है।

ओमप्रकाश मेहरडा
शोधार्थी लोकप्रशासन विभाग श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबडे.वाला विश्वविद्यालय,चुडे.ला,झुंझूनु राजस्थान.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net